GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

Class No. H 891.433

Book No. Bh 465K

N. L. 38.

MGIPC—S8—21 LNL/59—25-5-60—50,000.

NATIONAL LIBRARY

This book was taken from the Library on the date last stamped. A late fee of 1 annaor 6 nP will be charged for each day the book is kept beyond a month.

23 SEP 1963

136

7 NOV 1968

N. L. 44.
MGIPC—S1—11 LNL/58--24-6-58—50,000.

श्रीश्रीगणेशाय नमः ।

किस्सा अफिमचो।

श्रील श्रीयुक्त मदनमोहन भटके आज्ञासे

श्रीयुक्त श्रीधर भटने यह किस्सा तैयार किया

कलिकत्ता

श्रीश्रीनाथ लाहाके हिन्दि

संस्कृत यन्त्रमे छपा गया।

यह किताब जिनको लेनेकी इच्छा होवे उन्कों शिमला कर्णवालि

ष्ट्रीटमे २०१ नंबरके मकानमे मिलेगा।

संवत १९२६

57

1869

NOT TO BE LENT OUT

H
891.433
BL 465 K

SHELF LISTED

NATIONAL LIBRARY
NO. 16077
DATE 30.6.60
CALCUTTA

श्रीगणेशाय नमः।

किस्सा अफिमचीका।

पहिला किस्सा।

नक़लहै कि एक अफ़ियूनि बातूनी हालत नशेमे एक अहीरबेपीरके घर रातको दूध पीनेकोगया उसकी औरत-नेकने कहा मियां साहब इसवक़्त थनतलेका दूध जो चाहतेहौ तो एकघड़ी ठहरजाओ तो तुमको अच्छेसे अच्छा दूंगी यह कलाम सुनकर वह अफ़ियूनि खड़ाहोरहा इसमे पिनिकने ज़ोर किया दूध लनेके खेयालमे ऐसा जमा कि अगर सिरपर की लिबड़ि उभकायकर लेजायतोभी ख़बरदार नहो और उस अहीरनीने अंधेरेके सबबसे यह खेयाल नकिया कि दूध खरीदनेवाला खड़ाहै या नही अपने घरकी टट्टी बंदकर फ़राग़तसे सो रही क़ज़ाकार उसरस्ते से एक छकड़ा लदा हुवा गुज़रा उसका गाड़िवानहर आनमे पोइश२ करता चला आताथा उसवक़्त यह आवाज़ उसके गोश होशमे पड़ो तो उस अहीरके दरवाज़के टट्टीपास लगकर खड़ा होरहा वह छकडावोबैल अपनी राहलगा लेकिन फिर उस अफ़ियूनिको ऐसी पिनक आई के सुवह होगया।

शेर॥ सूवहका जिस घड़ी हुवा तड़का। उस घड़ी उसको यह हुवा धड़का॥ याने वह अहीरनी अपने दरवाज़:के क़रीब पेशाब करनेको जो बैठितो आवाज़ नासाज़ छुल२ की एक-बार जो आई तो वह अफ़ियूनि जबूनी पिनिकसे चौक करबे-

अक्लोथार होकर बोला अरे ओ कंबख्त नादानीसे मेरे दूधमे पानी नमिलाना नही तो मारे जूतीयोंके तेरे सिरका मग़ज़ निकाल डालूंगा यहबात वाहीयात वह अहीरी सुनकर जो टट्टी लगी खोलने तो वह अफ़ियूनि जो उस्से लगा हुवा खड़ाथा धड़से गिरपड़ा एकबार बेअक्लोथार भुझुलाके कहने लगा ऐ भडुवे अंधे छकड़ेवालेमैं इसक़दर अलग बचकर खड़ा-रहा लेकीन तूने यहां भोधक्कामुझको देकर गीराया ॥

शेर ॥ खोदातेरे छकड़ेको ग़ारतकरे। गाड़ीकाया वैल तेरामरे ॥ केजिस्से तेरे वाप दादेक लीख। मिटे और तूं दर-बदर मागे भीख ॥ यह गुफ़्तगू उस अफ़ियूनिकी सुन-कर अहीरनी कहने लगि ऐ अज़िज़ वातमिज़ तू शामसे अबं-तक यहां खड़ाथा रहमत खोदा कि। जो अफ़िम ऐसाही तू खायेगा। तो अगर जोरपोनिकमे मर जायगा ॥ १ ॥

दूसरा किस्सा।

एक अफ़ियूनि जनूनी खुशमाशयारवाशथा चंद मूहतके बाद जब उसको नशा दौलतका उतरने लगा और फ़िकर एखराजात ज़्हरीके पोस्त और हड्डीयांबाकी रहगई तो एक रोज उसके जोरूजे कहा ऐ अजिजसाहबे तजवीज़ मर्दोंको इसक़दर खानेनशीनो नही चाहीए यह भि नहूसतका सबबहै इस हालतमे तूंसफ़र कर चुनांनचे हदीस शरीफहै अल सफर (वसीलतुल्ल ज़फ़र) यह कलामनेक अंजाम अपनि जोरूने कखोकासुन कर अफ़ियूनि कहनेलगा ॥

शेर ॥ बहुत खूब ऐ जानवालागोहर। मोक़रस्क हूंगा-मैफ़रदा सफ़र ॥ अलमुद्दा वह सखुनपर बरवक्त सेहर सफरका इरादा करके घरसे राही हुवा जिसवक्त वह तिरयाकि सहरसे

बाहर पहुंचा तो वहां एकतकिया नेहायत जानफ़ज़ा नज़र आया उसवक्त यह उसके दिलमे सूझाके इसजापरनशापानिब कैफियत करके जरा आराम फरहत अंजाम किजीये इसकेबाद मंजिल मक़सूदकि राहलीजीये ॥

शेर ॥ तबियतके अपने खूशी खांहैं। जहांबैठे वहीके मेह-मांहैं॥ अलहासील वह अफ़्यूनि बातूनी वहां बैठकर नशापा-निमे मशगूल वो मस्त्फ़रूवा बादफ़राग अफियूनवो गज़क वह सरदक सोरहा इस अरसेमे सोते२ जो आंख खुलगइ तो दिन घड़ि चार एक नज़र आया एकाएक घबराके कहनेलगा॥

शेर॥ थक गये मेरे पावतो अफ़सोस। अभि मंजिल पड़िहै कालेकोस॥ अलगरज जलद२ कमर बांधकर हाथमे हुक्काकि कली लेकर बशकल गुल खंदान हालतनशेमे खुशबो खुर्रमचल निकला रफ़ते२ अपने शहरके दरवाजे पर लोगो से पुछने लगाके ईस शहर आली कदरका नाम नेक अंजाम क्याहै एकशख़्सने कहाके इस शहर को हींदूस्तान कहतेहै ईस कलामनेक अंजामको सुनकर कहने लगा सुभान अल्ला: अजब कुदरत इलाहीहैके इस शहरका नाम हमारे शहरके हमनामहै रफ़ते२ शहरके दरमेयान आंकर एक दूकानदार खुशएतबारसे कहनेलगा कि ऐ बिरादरबजानबराबर इस शहरमे कोइ अफ़्युनि खुशमाश यारबास बूढ़ ओबाश रखता है के जिसके घरमे सुवह ओ शाम अपने नशापानिका आराम बखूबि तमामहो उसने कहा फ़लाने महल्लेमे फलाना अफ़्युनी रहताहै जोतूं उसके घरमे सूबःशाम जावेगातो अलबते तुझको आराम तमाम मिलेगा ॥

शेर॥ तज्दीकयहांसे नकुछदूरहै। वह इस शहरमे खूब मशहूरहै॥ यह ख़बर फ़रहत असर सूनकर अफ़्यूनी

कहने लगा यहभी अजीब ओ ग़रीब बातहै के यह अफ़ियूनी भी हमारा हमनाम मिला और महल्लेकाभी नाम हमारे महल्लाकाहै यह इतिफाकं इस आफ़ाक़मे कम देखनेमे आयाहै अलमतलंब वह अपने महल्लेको पूछतार अपने घरके दरवाजेपर जा पहुचा और दसतक देखकर कहनेलगा जरा दरवाज़ा खोलदो एक मूसाफ़िर ग़रिब बेनसिब तुम्हारे घरमें मेहमान आयाहै इस अरसेमे वक्त शब काहीगयाथा उसकि लौड़ी दरवाजा झठपट खोलकर कहनेलगी मीया सा हब हमारे घरका मालिकतो आज सफ़रको गयाहै लेकीन आप बकूशादे पेशानि मकान दिवानखानेमे रौनक़ अफज़ां हुजियो किसीतरहकि वेचैनी नहिहोगी यह गूफ़तगू उस कनीज़. नेकंखोकि सुनकर कहने लगा यहभी अजब इतफा क़बे सेया कहैकि हमारी और इस अफ़ि.यूनी कि हरजगह बराबरीही चलि आतिहै याने हम जो आज सफ़.रको निकले तो वहभि आजही मुसाफ़ि.रीको गया इसके सेवा हमारे सीमकान कि इस मकान आलीशानकी कित:है यह खेयाल दिलमे करके दीवान खानेमे जा वैठा और उसकी कनीज़. वातमीज़. चिराग़. रौशन करके लाइतो क्या देखतीहैके मूसा फ़ि.र तो नहीहै मियां साहब खुद आपही अपने मकानमे जिलोगरहै यह माजराहैरत अफ़.जा देखकर बीबीसे जा कहनेलगिके ऐ बीबी मेहमान तो कोइ नही मियां साहब खुद आंपहीहै तशरीफ शरीफ लायेहैं यह कलाम नाफरजाम उस कनिजका सुनकर बीबी कहने लगी यह क्या भकसातीहै अगर वह होता तो बाहर क्यो बेठता अपने घरमे न आंता वह बिचारा मुसीबतका मारा खोदा जाने आजकिस मकान वीरानमे वैठा होगा तूमुझपरना हक गालि चढ़ातीहै यह

सखुन दिलशिकन सुनकर लौड़ी चुपहो रही लेकिन साहब खानेकी बीबी ने दिलमे कहा कि मेरे घर मेहमान अनजान आज वारिद हुवाहै और मालिक घरका नही है भला और तकलीफ नहोसके ज़ादा तो मलाइ और मीठा चावल तो उसके वास्ते भेजे ताके यहभी जानेके हां किसि अफ़ियूनी साहब ज़राफ़तके घरमे शबबास हुवैथे अलग़रज उस खातूनने खाना खुश ज़ायके इस अफ़ियुनीके वास्ते भेजा उस खानाखुश गोवारको देखकर आफ़ियुनी दिलमे कहने लगा वाह वाहजहे क़िस मत आज खानाभि हमको हमारे ही घरका हाथ आया।

बकौल लोगोके॥ हक शकर खोरेको देताहै शकर। और सचभी यहहै॥ अलग़रज़ कनीज़ने बगौर देखातो साफ़२ मियां साहब नज़र आये उसवक्त कनीज़ बा तमिज बीबीसे आनकर कहने लगि को ऐ खातून जहान तुमुझको मारके पुरजे२ क्योनकरो लेकिन मैतो यही कहुंगिके मियां साहबहै यह गुफ्तगू दूबदू कनिज कि सुनकर बीबी जवाब देहउइ खैर क्या मूज़ाका मालूम हो जायगा वह बीबी दरवाज़ेके दराड़से जो नजर कनैलगी तो क्या देखतीहै को फ़िल हकिकत मियां साहबहै मज़ेसे खाना खाय रहेंहै येकाएक वह बीबी दबे२ पावों उसके पिछे चुपकि खड़िहोकर बगौर देखने लगि तो मिया आपरूप आये एकाएक उस बीबीने खफा होकर दो हथड़ पीठपर उस्को मारा और यों कहा ऐ भड़ूवे अच्छा मुसाफ़ारीको निकलाथां तूने वहि मसलकिया। सूबहका भूला जो शाम को घर आवे तो उसको भूला नही कहते॥ यह सखुन दिल शिकन अपने बीबीसे सुनकर और बगौर देखकर कहने लगी ऐ बीबी अगर योंही तुम हमारे साथ फिरोगि तो हमसे मुसाफ़िरी नहो सकेगी।

मसनवी ॥ यह सुनकर सखून वह जंन पारसा। लगी कहने तू सक्ताहैबैहया ॥ सफरतू करेगान हरगिज कहीं। रहेगातू किबलेनु मासायहीं ॥ जो महजूर होता न ऐसा वहहीज ॥ तो जोरू न कहति उसे बेतमीज ॥ २ ॥

तीसरा किस्सा।

एक अफि.यूनी मजनूनीका नौकरभि अफियूनिथा इतिफा.कन अपने घोड़ेपर सवार होकर आजि.म सफ.र ज्ञवा आसनायेराहमे एक चौकिपर नशापानि करनेको ठहरगया और घोड़ेको कायेज: करके एक दरख्तसे बांधके खड़ाकर दिया नशापानिसे फारग होकर उठकर तैयार ज्ञवा और नफ.रसे यों कहने लगाके ऐनफर खबरदार कुछ भुलना नही क्योंके यह मुसाफिरीहै उसके जवाबमे वह नफर गोदीखरबोलाके साहब भूलनेका क्याजिकरहै अलाहाजुल कयास आपके पास अफियूनका डबा और मेरे पास ज्ञक्काकीकली और कोडावो तोबड़ा मौजूदहै जाहिरमे तो कोइ चीज भूली नही बातिनकि खोदाजाने।

शेर। अभि कुछ ऐसा नशाभी तो नही। जो भूल जावे चीजको कही ॥ अलहासिल वह दोनो गाफिल मंजिलको चल निकले और घोड़ा वही रहा फिरचंद क.दमके बाद वह अफि.यूनी नफरसे पूछने लगा ऐ नफर गीदीखर कुछ भूलेतो नहि देखतो मुझे शुभा नज.र आताहै ठहरजा फिरवहनफर बेखबर बोल उठाके साहब आपको कुछ वहम होगयाहै मेरा असबाब मेरे पास और आपका असबाब आपके पास भूलनेका क्या जिक्रहै आखिर कार यह दोनो नाबकार इसी गुफ.तगूमे सरांएमे पह्रुचकर एक भटिहारि इलारि

नामसे कहनेलगेके ऐ भटिहारिन खाने औरदोने घासकि जलद तैयारिकर हमारा मारे भूखके कलेजा टूटा जाताहै क्योंके हमलोग अफियूनीहै हमको भूख औप्यास बरदास नहींहै यह कलामनेक अंजाम भटिहारि सुनकर दाने घासकि फिक्र करके खाना पकाने लगी एक घड़िके बाद भटिहारि दिलमे कहने लगिके मियां साहबने दाना तो मगवाया और भिग-वाया लेकिन घोड़ा अभितक नहिं आया शायद इनका घोड़ा मांदगिसे पिछे रह गयाहै इस सबबसे भटिहारि नफरसे पूछने लगीके ऐ अज़ीज़ बातमीज दानाघास मेरेपास तैयार रखाहै और तेरा घोड़ा अभितक नहि आया इसके क्या माने कुछ लोग पिछे रहगएहैं या घोड़ा बिमारिसे मियांके सवारिके काबिल नहि था।

शेर॥ अकिलमेरी इस जगहहैरानहै। किसतरहका हाय यह सांमानहै॥ यह कलाम वह सुनकर नफर कहने कहने लगा फिलवाके मियां सच कहतेथे के कुछ भूलेतो नहि मालूम हुवाके शायद घोड़ाही भूल आये एकबारगि वह नाबकार मीयांसे आनकर कहने लगा कि मियां साहब भटिहारि कहतिहै के तुम्हारा घोड़ा निगोड़ा कहांहै दाना घास खराब जाताहै यह गुफ्तगू नफर बदखो कि हूबहू सुनकर मियां बोले क्योबे गदहे मैन कहताथा कि कुछ भूलेहैं आखिरकोमेरा कहा सच हुवा।

बैत॥ यह सखुन सुनके वह नफर बोला। हामियां आपनेया सच कहा॥ अलगरज दोनो पादजे हगते घोड़ा लेनेंको एकदम दौड़े॥ ३॥

———

चौथा किस्सा।

एक अफ़ियूनी बेहूनि वामदिल आरामपर सोताथा नशेमे बराए हाजत पेशाब वह बेताब जो उठा तो एकाएक कोठेके निचे गिर पड़ा और बेअख्तेयार पुकार कर खि़ज-मत गारसे कहने लगा ऐ फलाने यह धमाका बडासा कैसा हुवा देख तो सही क्याहै यह बात वाहीयात सुनकर खिज-मतगार गंमखार कहने लगा मीयां साहब मै इसवक्त अपना खाना पकाताहूं नाहक कहां उठूं कोइ बिल्लि उल्लि कूदिहोगि और तो यहां कुछ नजर नहि आता इसमे फिर अफ़ियूनी बेहूनीने कहा ऐ अजि़ज बेतमिज उठकर देखतो सही हमारे गोश होशमे बड़े धमाकेकी आवाज़ नासाज़ आइ है वह खिजमगार एकबार खफा होकर बोला मियां साहब तुम कहाहौं मुझको तुम्हारि आवाज बेअंदाज निचे कि सुना इ देतिहै और आप मेरे रूबरू कोठेपर गऐथे यह गुफ्तगु खिजमतगार नाहंजार कि गोश जद करके वह अफ़ियुनो बोला तु उठतोसही मैभि तो इसि ताजुबमेहूं।

शेर॥ मुझेभि तो यही अब खौफ गंमहै। के यह कैसा धमका पुरसितमहै॥ अलगरज़ वह खिजमतगार एकबार चिरागलेकर जो देखेतो मियां साहब आलिशान नावदानमे पड़े है फिर वह खिजमगार ग़ंमखार कहने लगाके मियां साहब तुम तो इसवक्त नावदान परेशान मे पड़ेहौ यह सखुन दिल शिकन सुनकर वह अक्षिमचिं कहने लगा पस यह हमा-रेही गिरनेका धमाकासाथा हाय हाय बड़ि चोंटखाइ॥

मसनवी। यह कहकर लगारोने वह जार जार। हैरतमे इस मैहूं और उसकेयार॥ जो ऐसा नहोता वह बेहोश आह।

तो यों लोग हस्ते न शामो पगाह ॥ हकिकतमे गाफिल जो महजुरहो। वह बेहतरहै हस्तीसे दूर गोरहो॥ ४ ॥

पाचवां किस्सा।

एक अफियूनी मजूनी लब बाम वाला मोकामपर बैठाथा कि एकाएक हालत नशेमे यह खेयाल दिलमे आयाके हमारे सामने दरियाए बेपायान लहरा रहाहै खोदा न खास्त: जो यह पानि तानाइकरके मेरेकोठे पर जायतो बड़ा गजब होगा इस खेयाल पुर मलालमे आखिरशको ऐसि अम्वाज तो हमने आकर घेरा और दरियाये वहशत बढने लगा आखिर कार वह दरिया नापैद अकिनार तोहमका उनके कोठेसे आके हम किनार हूवा तबतो यह अफियूनि दरियाये यिमाकतमे कुल्ल गरक होकर एक मोढ़े पर चढ़ बैठा और यह शेर जबानपर लाया॥

शेर॥ देख दरियाको मेरेदिलपै यह लहर आतिहै। किश्ती उमर सद अफसोसबही जातिहै॥ इस अरसेमे उस दहलि को मोढ़ेपर यह खेयाल पुरमलाल आयाके यहाभि पानि बतगयानि आनपहूचा यह सोचकर दिलमे कहने लगाके आखिरतो डुबतेहैं इससे तु दरियामे कुदकर पैर निकले हरचे बादाबाद॥ बकौल लोगोंके॥ मरता क्यानकरता॥ यह सो चकर वह अफियूनी जनुनी कोठे परसे गिरके जमिन पर हाथ मार मार कहने लगा बेढापारहै भाइ यह माजरा हैरत अफजां एकशखश देखकर इस बेहवासके पास आया और बगलमे हाथ देकर उठाकर कहने लगा मियां साहब खबरदारहो आपको संभालो यह क्या वाही तवाही बकतेहो

यह सखुन दिलशिकन सुनकर वह अफिमची बसद खफगि बोलाके मेरे पावतो तह परलग गया तूमुजको नाहक पकड़-ताहै ॥

मसनवी ॥ यह वाहि सखुन उस्के सुन वह अजिज। लगा कहने बकताहै क्या बेतमिज। किधरकोहै दरिया किनारा कहां। जोतू पैरताहै यहां हरजमां। यह सुनकर वह अफियूनि कहने लगा। मै पिनिकके दरियामें था तैरता। मूझे अबनशा कुछजो कंमहोगया। तोतेरासखुनसाफका-सूना। गरज होके नादम वह मह्जूर खुब। गया हाय दरिया गैरतमें डूब ॥ ५ ॥

छठवां किस्सा।

ऐक अफियूनी जबूनी हालत नशामे बेहिसाब पेशाव करनेको जो बैठा इतिफाकन वह मकान परेशान पुरतर्माहि था यह अफियूनि बातूनि नशीबकि तरफ बैठकर हाजत दफे करने लगा एकाएक वह पेशाव लहराता हुवा उसके तरफ रूजू हुवा उसको नशेमे दरियाम्र हुवाके सांप शाह आह मूज बे गुनाहको काटनेको आताहै इस खेयाल पुरमलालमे यह ज्यो ज्यो पिछे हठता त्योर वह पेशावकि धार बेअखतेयार लहराति उस्के तरफ आतिथि अलगरज जब वह मूत किल-किर उस बेपिरके पावोंसे लगगइ ऐक बारबेअखतेयार आह मारके लोटगया और यों कहने लगा ऐ मूजिले काटखा मैबे-कस बेबसहूं ॥

नजम ॥ बसनहि चलताहै कुछ अबतोमरा। काटजिस जापरकेजीचाहेतेरा ॥ सुनके यह तकरीर उस्की राहगीर। बोला अहमक मूतकिहै यह लकिर ॥ इससे क्यो डरताहै तू

अंधानहो। जहर इसके काटनेमे कुछ नही। सुनके यह गुफ़तार उसराहगीरकी। लोटनेमे उस्के कुछ ताखीर की॥ ओर नद्योकि लहर कुछ कमहुइ। तब उसे महजूर गैरत बस-हुइ॥ ६॥

सातवा किस्सा।

ऐक अफियूनि बातूनि भटिहारि सरायमे ऐक मकान दस्तानमे ऐक पयकके साथ मोकिम हुवा बाद फ़रागतांम वह बदइंजाम वक्त आरामके ऐकबारी भटिहारिसे कहने लगा ऐ भटिहारो प्यारी तूमुजको वक्त सेहर मोकर२ सबसे पहिले जगादेना ताकेसबेरे ठंठे२ जाउं और पयकभी उसेयोंहि कहने लगा के मुझकोभि सूबहके तडके बेखटके उठादेना अलगरज वहदोनो आसना बहम ऐकजा सोरहे कजाकार ऐकबार अफियूनि बातूनि कि जो आंख खुल गइतो क्या देख-ताहै कि सारि खिलकत और भटिहारि खाब गफलतसे बेहो-शहै जल्दीसे कमर बांधकर और पयगकि पगड़ि घबराहटसे सिरपर रखकर चल निकला जब इस अरसेमे आफताब आलमताब जिलवगर हुऐ ऐकाऐक उस अफियूनि जबूनिको अपने परछाहीं कि पगड़ि पर जो कलगि नज़र आइतो ऐकबार हाथ जानूपर मारके कहने लगा लाहोल बिलाकूबत भटिहारि गुनिबानिने पहिले अपने पयग यार गंम खारको जगाया और हमको न जगाया न हम जागे॥

शेर॥ हाय अफसो सहमरहे पिछे। और पयग होग-या आगे॥ इस खेयाल पुरमलालसे वह अफियूनि जबूनि जाताथा और वह पयग भि आ पहुचा और पिछेसे उसके सरपर धौल जड़कर कहने लगा ओ दग़ाबाज नासाज़

मेरि पगड़ि लेकर क्यो भागा तूभको अपना आगा पिछा न सूभाया सचबता नहितो इस लपेटमे तेरि भशिखत बिगड़ जायगी यह सखुन दिल शिकन सुनकर वह अफियूनि कहने लगा ऐ अज़िज बेतमिज़ क्या तूमेरे पिछेथा मैतो तेरि पगड़िसे समभाके भटिहारि खोदामारिने पहिले तुजको जगा दिया और मुजको न जगाया बारे अहमदूलअल्लाके फजलसे तुजसे मैहीं आगे पहूंचा ॥ तेरे आनेसे हुवा मालूम अब। होगइ तकसिर मूभसे कुडब ॥ वास्ते हकिकतके अभी करदेमाफ। अगर चेतेरा दिल हुवाहै बर खिलाफ ॥ सुनके अफियूनीके तकरिरको ॥ हो गया महजुर चुप वहने कखो ॥ ७ ॥

आठवा किस्सा।

ऐक अफियूनो मजूनी अपने खिजमतगार मरदूदसे ऐक टकेका दूध रोज़ मगवायकर पीता लेकिन उसको लज्जत और हलावत न मिलातिथि इतनिबात वाहियातके वास्ते उस अफियूनि ने ऐक खिजमतगार होशियार मकार और नोकर रखके हुकूम दिया के ऐ दिल सोज़ तूहररोज़ इस खिजमतगार नाबकारके साथ जाकर शीर बेनज़िरले आयाकर यह फरमान उस नादान का सुनकर मूलाजिमयें कहने लगा। बड़ तखुबजो आपनेहै कहा ॥ मै आखोंसे लाऊंगा उसको बजा। अलगरज जब वह पहिला खिजमतगार नाहंजार ऐकबार दूध लेने चलातो वह दूसरा। नौकर कमर बाधकर उसके हमराह हुवा और आसनाऐ राहमे जाकर पूछने लगा के ऐ यार गंमखार यह माजराऐ हैरत अफजां क्योकरहै जब वह जवान बैमान बोलाके ऐ भाइमै सोदाई इस अफियूनि जनूनिसे एकटका दूधका रोज़लेताथा लेकिन डेढपैसाका शीर पानि

मिलाकर इस अफियूनिको पिलाताथा अबतोतू जिसतरह कहे सो बजालाउ यह तकरिर बेपिर गोशजद करके कहने लगा खैर क्या मुजाका। लेकिन अब ऐक पैसे कादूध उस मर-दवाके वास्ते लेचल अधेला तूले और अधेला मुजकोदे ॥ कहा पहिले नोकरने क्या खुबहै। यहिबात मुझको भि मरगुबहै ॥ अलहासिल उस अफिमचिको शीर बई ततबिर आधा पानि मिलाकर आनेलगा आखिर कार नाचार उस अफियूनि ने तिसरा नौकर फितनगर और रखा उसकोभि यहि हुकुम दियाके मेयां मुजको बाजारके दूधमे कुछ फि मालूम होता-है और यह दोनो नौकर फितनगर ऐसा गंबन करतेहै के मेरा पैसा बराबादजाताहै और दुधका मजानहि मिलता यह कलाम वह नाफर जाम सुनकर बोला ऐ खोदाबंदनेयामत ॥

बैत ॥ हमेकाम जो कुछके फरमायंगें। जरांफि न उसमे कभि पाएंगे ॥ वह नोकर नहो हम जो आका काम। करें बेतमिजीसे हरःसुब शाम ॥ हासिल कलाम वह अगले दोनों नौकर बद ईनजाम दूध लेनेको चले तो अफियूनिने तिसरा नौकर फितन गरसे कहा मेया ईनदोनो जवान के हमराह जाकर शीर बेनजिर लेआव लेकिन खबरदार यह दोनो नाहं नजार कुछ गबन नकरनेपावें ॥

शेर ॥ नहि तो मै तुमसेभि हूंगा खफा। अगर दूध आएगां वैसाबुरा ॥ अलगरज वह तिनो नौकर एकटके कें दूधको खरिदने चले लेकिन मोलाजिम तिसरेने दोनोसे पुछा ऐ भाइयोंयह वारदात वाहियात क्याहै सच कहो बहर सूरत हमं तुम्हारे शरिकहै नोकर अौवलने कहा मेयां सचतो योहै हमारे आका टकेका दूध मगाताथा और अधेला आपरखता-या लेकिन जिसवक्त यह दुसरे साहब इसके ताकिद को आए

तो उन्होने कहाके ऐकपैसेका दूद उसमरदूद को बहोतहै वाकि ऐ कपैसा हमतुम समझलेगे सो ईससूरतपुर कदुरतसे हम औक़ात बसर करतेहै ॥

घोर। अब जोतूकह करेंवहि हमभी नगादेहौ कुछनही कमभी। यहसखुन हैरत फजन सुनकर बहुतिसरा नौकर कह नेलगा कोऐक पैसा तुमदोनौलो और ऐक पैसा मुझको दो मै समझलुगा देखती यह खोटानोकर उसकचे अफियुनि को राजी करताहै किदमडि के दूधमे खुसरहे और ज़रान जलेन भुने उलमतलुब उसपक्के नौकरने क्या फेलकिया कि दमड़िक मलाइ लेकर धरमे आया और उसकोताक़मेरखकर चुपका होरहा जिसवक्त उस अफियुनि को पिनिक आइ उसनौकर फितना गरने दोनो मोछोपर थोड़ि मलाइ रखदी ओर अलग होरहा इस अरसेमे पिनिक से जो उस अफियुनि कि आख खुलि तो ऐकबार खिजमगारसे कहने लगा ऐ नोकर वखता वर घोर बेनजोर लायानही वहमोंलाजिमवोला ऐ साहवमे घीर बेनज़ीर लायाथा आपने नोशजांभिकर चुके उसको बड़ि देर हुइ बलके आपने नशाके हालतमे कुलीतकनहिकी जरा मोछोको तो मोलाहजाकिजिये तबवह अफियुनि घीर खार ऐकबार मोंछोंको जो तावदेने लगा दोनो टुकड़े मलाइ वालाइ केहथोमे आयगऐ वह फितनगर कहने लागां ऐ खोदा बंद दखिऐ कैसा मलाईदार खुशगयार दुधथा कि जिसकी छाली आपके मोंछोंपर जमगई ॥ यहसुनकर उसने कहा मेरे यार। बहुत खुब यहदुधथा खुशगवार। हमैसा जोलाऐगा ऐसा मुझे। तोमैभि बहोत खुशकरुगा तुझे। ग़रज़ उसनंऐ आदमिने उसे। किया एककमड़िसे खुश वाहरे। मसल सचहै मजहर यहजाबजा। मिलेंहे बहुतछाने सेकरकरा

नौवांकिस्सा ॥ दो अफियूनि बेकनि बहम बैठकर यह मेस्वर किनान हुवे के कोइबात ऐसि तलाश बराऐमास कि जिएके जिस्से बखुबी औकातबसरहो और गिज़क बेधड़क अफियूनि की बहमपहुंचे इसमे दुसरा अफियूनि हाकनि बोलाके आवो हमतुम शरकतमे बाश्राशनाइ मिठाइकि दूकान आलि शानकरे ताके माशगिजक खुराश खुशिवो खुरमि से गुज़ारे ओर अफियूनि कि चाट हरहात हाथ आयाकरे फिरवह पहिला अफियूनी बातूनी कहने लगा वाके ऐयार गमखार यह तदबिर दिलपज़िर ने हायतखुब और मरगुबहै लेकिन बाज़ार शहर मे मिठाइ एै भाइ बेंचना कमाल इज्जत और हुरमत का जवाल है इस्से तो यों बेहतर है केगन्नाका खेतकिसि रेतमे बोइये और जिसवक्त गन्ने एकबार तैयार हो उसवक्त उनको बेचिये और छुरियांकरो लियां लेकर बैठे मसलन एक गन्नाहमने यड़ाकसे तोड़ा छिला नोशजांकिया उसीतरह तुम नेभि गन्ना तोड़ा और छीलाखाया दूसरा अफियूनि हाकनी बोलान भाइ मैतोदोगन्ने तड़ाक२ तोडूगा तबवह अफियूनि जनूनि ने उसके सिरपर धौलमारके कहने लगा एफसादकि गाठहराम ज़ादे के जड़ तू ऐसा खानेका जबरदस्त अरशका तारा है जो मूजसे ऐकगन्ना सरस खावेगा गरज इतनि सी बात वाहीयातका आखिरकार यह किस्से पुर आजार कोतवाल नेकखसालके रूबरूब जोहवायह माजाराहैरत अफजां सुनकर वह कीतवाल नेक खसाल कहने लगा तून्हारे यह किस्से पुर गुस्से हमसेन फैसलहोगा हासि लकलाम वहदोनो नाफर जामं एकबार फौजदार मामले शार के क़रिब जाकर आपना अहवाल पुरमलाल बनोक जबान बयानकरनेलगे उसफौजदार सलिके शारनेपूथा के तुमने गन्ने काखेत किसमोकाम दिला

रासपर बोयाथा जो यहकिस्सा बरपाहुवा दोनो अफियूनि बेहनी बोले के खोदावंद नेयामत शहर करामत ॥

नजम ॥ हमारे और उसके यहठहरि थिबात । के गन्ने कहीं बोइये नादरात ॥ सोमैंने कहाथा केएकनौशकर । वहो खे तमे खाऊंगा छिलकर ॥ कहने लगा मैतो खाऊंगा दो खुशि इसे होया खफाक्योन हो ॥ इसबातपर मैने ऐफौज़दार उसे धौल मारीथिबे अखतयार ॥ यह अैसा कहाका है मुज सेबड़ा । जोइना शराकतमे खाऐभला ॥ यहवारदात वाही यात सुनकर फौज़दार सलिकैदार कहने लगा तुम्हारा किस्सा बराबर हिस्सा चाहताथा लेकिन तुमने वहगन्ने जोखेतमे बोऐ है उस्का मासूल दाखिलकरो इलहासिल वहदोनो अज़खुद गाफिल मार धाढसे जरिबाना माकूबुल मै मासूल देकर योंक हने लगे ॥ अबक्याहुवेहमारे रोए । कूतकरली बिनजतेबोए ॥

दशबाकिस्सा ।

एक अफियुनि बातुनि कि जोरुनेकखो शीरी दह नका नाम दिलआराम मिसिरीथा इतिफाकन एक रोज वह अफियुनि पिनिक के आलममे औघता बैठाथा हम साय कि एक औरत नेक खसलतने उस्के जोरु नेकखोको बरजबान शीरीं पुकारके कहा बीबी मिसरी ज़रा इधर आना यहसमझाके कोइ कहता है मिसरि इधरलाना इस आवाज़ खुश अंदाजको गोश जदकरके हालत नशेमे अपनी बीबी सेकहनेलगा ॥ नजम ॥ माइसाहब जो मिसरी तुम लेना । मेरे भी मुहमे आके एक डलिदेना ॥ आज पिनिक मेथायह अफियूनि । पाय लनृत तेरे सबबदूनि ॥ सुनके उसबेहया कि यह गुफतार । कहा बीबीने भडुवेनाहमवार ॥ यहसखु न मुहसे निकाल । नभुंके इसतरह ज़ुबांकोसभाल ॥ खोलकर

आंखदेखऐ बदखो। मैतोहूं तैरोवेयाहताजो ॥ सुनि इसकुढब कोवहमज़बूर। दीलमे नादमहुवावहूत महजूर ॥ १० ॥

गयारहवां किस्सा।

ऐक अफियूनि बातूनि प्यालेभरके अफिम घोलता और उसमेसे थोड़ा पीता और बाकि चारपाइके निचेरख देता जिसवक्त सरूरका अस्पतेजगाम मैदाननशेमे माद गिलाता तो चस्कीका एककोडादेता उलमुदा वहहमेशा योंही अमलमेलाताथा कज़ाकार ऐकदोबार चूहानावकार उस्की अ अफिम पीगया इसबात बाहीयात को दरियाप्त करके कहने लगा हमारि अफिम चूहामालून पीजाताहै यहनेहायत ग़ज़ब पुरताजुबहै देखोतो आजउस चोर लगोरको मै क्योंकर पकड ताहूं यहखेयाल महाल दिल्मे करके बदानाइ खरी चारपाइ पर लूगिबांधि और उलटा लेठगया और सिरको सिरान्हेकि तरफ लटकाकर अपने अफियूनकि निगहबानि करनेलगा इतिफाकन उस्की खुशियावीननकेछेदसे लटक करकहीं प्याले करिब आपहूचियी यहजूफनुनशे केहालतमे समझाके यही चोरलगोरहै चुपकेसे हाथको पाटि कितरफसे दराजी अंदाज करके झट अपने खुशियांको पंन्जे होसायतसे दबूचलिया इस्से ऐकबऐक ज्यो फोतोंमेदर्दबेअख्तेयार होनेलगा तोयहसखुन जबानपरलायाके अबेतूने भीखुबजगहताके करपकड़ी गरज जैजैवहचूहा जानकरदबाताथा त्यों२ उस्के खुशियेमेदरद हो ताथा यहसर्द्होवा जाताथा तबतो यह अहमक मुतलक कहने लगाके अबे जबतक तूनछोडेगा मैभी तुझको हरगिज नछोडू ंगा इस्मे कुछ क्योनहो तूमेरेहाथ ऐ बदबखत आजमूदतके बादच ढाहै ॥

शेर ॥ बेतेरिजानमारे ऐबदज़ात। नछटाउंगा ताकेयाम

तहात ॥ यहमाजराहैरत अफजांउसका देखकर एकयार गंम खार कहने लगा के वाके ऐ यार तुमने अपना चोर लगोर खुब पकड़ा लेकीन उनेसभी तूम्हारा खुबजगह पकड़ीहै किजिस्से तुम्हारि जानलोटा छोड़ी इस्से बेहतर येंहै के तुमउस्को छोड़दो नही तो तूम्हारि जानमुफत जाएगो यहसखुन दिलशीकन सुनकर वह अफियूनि जनुनि बोला एै यार गमगुसार मै भी तो यहीकहताहूं के तूछोडेगा तोमैभी छोडूंगा सो यह मूजी बेहया नही मानताहै उसयारगंमखारने कहा पहिले ऐ भाइ सौदाइतू उस्को छोड़दे फिर वहबदखो अगर तुजको न छोडेगा तो जोचाहनासो मूजको करना इसबातका मेरा जिम्मा है अलकिस्स उस अफियूनि जबूनिने जो अपने फोतौंको छोड़दिया तो वहदर्दे गर्द होगया यहतमासाय अजीब वगरीब देखकर अपने यार गमखारसे कहने लगा भाइजान अगर तू इस आननहोता तोमेरा किस्सः पुरगुस्सः कभी फैसलन होता मेरे सरपरतेरातो यह अहसान। ताकयामरहेगा मेरिजान ॥ अहमकसे अपने नाहक ऐमजरूर। मुफ्तमे यारको कियामंजूगूर ॥ ११ ॥

बारहवां किस्सा।

एक अफियूनीमखबुनी का चोर सीने जोर जाजरूरका लोटा हालत नशेमे आगुसे उडालेगया और बाद फराग हाजत अफियुनि बातुनिने जो आबदस्तको लोटा तलाश किया तोहाथन आया खैर जबुरन कहरनवहासे उठकर मकान दस्तानमे आया और एक लोटा मगवायकर खबरदारी और होशीयारी से पासरखता चन्दरोजके बाद वहदूज्द बदखसलत देखकार दूसरा लोटा भी लेगया यह अहवालपुरमलाल अफियुनी जबुनीदेखकर बहोत घबराया आखिरकार उस नाबकार पाद

बावरे को यह सुझीके अब किसीफतरत पुर फराख्त से चोर नगोर को पकड़े यह खैयालवह बदखसाल दिलमे करके जा अहूर पुर फतुरमे लोटाकि जगहपर चादर सिरसे पावोंतक ओठकर हाथ आगे छातीके खमकरके आफताबे किसुरत बन करबैठगया और दिल्मे कहने लगाके वहचोर लगोर मुजको आफताबे समझकरलेने आएगा तो मैं उस्को पकड़लूंगा ॥

घोर ॥ गुलमचाऊगा और करूंगा घोर। आज पकड़ाहै मैने अपना चोर ॥ गरज यहखेयाल वहबदख.साल जीमेकरके योंही अमलमेलाया क.जाएकार वह चोर नाबकार अपनी चाट पर आलगा तो जाजरूर इल्लतमामुरमेगया देखताहै के लोटा तो नहिहै मगर उस्की जापर कोइ आदमि मुहचादरसे लपेट लपाट करबैठाहै यहमाजरा हैरत अफजांब गौर वहचोर देख कर कहने लगा के आज कुछदालमे कालाहै गरज उसचोर लगोरने बराए अजमाइश एक कंकड़ी बड़ीसी उस आफताबे तगलबेपरमारि अफियुनि मख.बुनी कंकड़ी खाकर दिल्मे क हने लगा के आफताबेपरजो कंकड़ी लगतीहै तोटंसेबोलताहै अहियान अगर लोटा न बोलेगातो यह चोर लगोर भटक जावेगा यह सोचकर वह टंटंटं करने लगा यह आवाज. नासा जं सुनकर चोरमुह जोर कहने लगा चखुश आज आपरूप लाएहैं के आफताबे बनकर बैठेहैं एकलात उस्को पीठपर जड़कर फरारहोगया और अफियुनि जबुनि जाजरूर मे गिर कर घ घ करने लगा याने जिसतरह आफताबे लोघड़जाताहै और उस्का पानी घ घ करताहै ॥ इसफराख्तपे तुझको अफि युनिं। क्योंनसारा जहांकहेकोनि ॥ इसतरहसे भलाकही एै कोर। हाथ आयाहैभो किसिके चोर ॥ ग.रजं उस्के अकिल परमहज.र। क्योनलानतकहें सबअहलघोर ॥ १२ ॥

तेरहवांकिस्सा।

एक अफियुनी मखबुनी जाजरूरमें जो पिनिकमे आयातो इसतरह गिराके सिरतो नीचे और चुतड़ उपरहुइ कितने देरीकेबाद उस्के जोरूने कम्बोने लोड़ीसे कहा ऐ कनीजदील अजीज देखतो मीयांसाहब जाजरूरसे अभितक नही आऐ इसका क्यासबबहै अलगरज वह कनीजबातमीज अधेरिरात पर गुलमातमे टटोलते जाजरूर गलाज त मामुर मे इधर उधर तलास करने लगी ऐकाएक उस अफियूनि जनुनी के चुतड़ोपर जी हाथ जापड़ा तो एकाएक घबराके बीबीसे आके कहने लगो ॥ बीबीसाहब मीयांकि सीरकोइ चोर। काटकरले गए गजबहै यहजोर ॥ अजबराए खोटा ॥

शेर ॥ जराचलके देखोतो ऐ बीबी अब। यहकैसाहुवाहै गजपुरताब ॥ यह अहवाल पुरमलाल सुनकर वहनेक सफात वेहात दिलमे कहने लगी के यहतो हालत नशायमे बेतहासा औधांपड़ाहै ॥ खैरियतहै मीयांवहरसूरत। लौड़ीके होग गइहै उलटीमत ॥ आखरस बीबी अपने शौहरको। लाइउस जाजरूरसे खुशहो ॥ और लौड़ीसेबोलि ऐ नापाक। तेरे मुह पर पड़ेछानकेखाक ॥ जीतेजीहायमेरे शौहरको। आजमारा थातूने ऐ बदखो ॥ अलगरज उस्के जनने ऐ महजूर। खूबभला कोके कसाफतदूर ॥ १३ ॥

चैदहवा किस्सा।

ऐक अफियुनि बेहनोके जाजरूका लोटा ऐसा टुटाथा के जबवह नापाक बराऐ ऐईतियाज जातानो जराजरा रखकर उस्का पानी सबबह जाताथा वक्त आबदस्तके इतना नरहताके वह अफियुनि बातुनि आपको पाककरता गरज ऐकरोज खफा होकर जाजरूमे कहने लगाके लोटेटूटेका पानी रखकरबह जाऐ

10077 dt 30·6·60 Rs 1.00

गा औमे आबदस्त की खातिर गरं खातिर हूंगा इस्से तो बेह तरहै कै आज पहिलेही आबदस्त लेलिजिये इस्के बाद जाकर बाफरागतसेफिरे फिर इस लोटे टूटेकापानीब आसानी बहजा ऐगा तो खायेसे ॥ आखिरशउसमल्लूने वैसाहीकिया । वेहगे पहीले गाड़कोधोया ॥ वाहरे तेरि अकिलवाहशहूर । ऐसे चूतीएपर लानतकर महजूर ॥ १४ ॥

पंदरहवा किस्सा ।

ऐक अफियूनिकिहै मशहूर नकल । तुमसे यारो क्याकरे महजूर नकल ॥ कायदा अफियूनकाहै ऐ दोस्तों । कबज कर तिहै उसे खाताहै जो ॥ ऐकदिन जोरफःकरने ऐहतेयाज । पा खानेमे गया वहबदमिजाज ॥ खूबकूंथा औ कांखाबैठकर । एकभीलेड़ी न निकले उस्किपर॥बादऐकलहजे केलेड़ीखुश्कसी। सफरेसे बाहर जोही जाहिरहूइ । देखकर लेड़ीकोबोलाते शखा । क्यो नही आति निकलऐबेहया ॥ क्यामैहव्वाहूं जोखा जाउंगातुझे । इसतरह आजिज जोकरतिहै मूझे ॥ १५ ॥

तमामशुदकिस्से अफियूनियोंका

इस्तेहार ॥

यह सब पुस्तकें जिन्को लेनेका दरकार होवे वह कलकत्ता ग्रमला कारनवालीसष्ट्रीट ॥ नंबर ॥ २०१ ॥ हिन्दि संस्कृत यन्त्रमे मिलेगा।

पुस्तकाका नाम।

महाभारत संस्कृत मूल वा टीका समेत।
लघुकौमदी व्याकरण।
फसाने अजायब, श्रीकृष्णदेव भट कृत हिन्दि भाषा।
किस्सा अफिमचिका श्रीश्रीधर भट कृत उरदू भाषामें अनुवाद।
महाभारत श्रीमदनमोहन भट कृत भाषा अनुवाद।
उत्तरगीता श्रीकृष्ण शास्त्रि कृत भाषा अनुवाद।
भर्तृहरिशतक ३ श्रीकृष्ण शास्त्रि कृत भाषानुवाद।
सामुद्रिक श्रीकृष्ण शास्त्रिकृत टीका और भाषानुवाद।
दानलीला।
बारमासा
बिद्यासुन्दर भाषा चौर पंचा शिका सहित

कादम्बरी भाषा।
चाहारदरवेश।
बरनमाला श्रीकृष्ण शास्त्रि कृत।
तुलसीकृत रामायण सप्तकाण्ड।
तुलसीसतसई।
सभाविलास।
बैतालपच्चिसी।
राजनीति।
सटीक गीतगोबिन्द।
दानलीला॥
प्रेमसागर।
बिहारीसतसई
कबितरामायण।
सिंहासनबत्तीसी।
हातमताइ।
महिम्नस्तव ओ शिवस्तव।
सटीक महानाटक।
सुदामा चरित।

जिस्को पुस्तक और विल, चेक, इस्तिहार इत्यादि छपनेका इच्छा होवे इस यन्त्र में आनेसे उस्का मनोरथ पूरा होगा।

श्रीश्रीनाथ लाहा।

3 औलाल्सं [illegible]